E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2025; 7(9): 125-127
Received: 16-08-2025
Accepted: 13-09-2025

डॉ. ममता सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर, संत हरिदास कॉलेज का हायर एजुकेशन, नजफगढ़, नई दिल्ली, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. ममता सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर, संत हरिदास कॉलेज का हायर एजुकेशन, नजफगढ़, नई दिल्ली, दिल्ली, भारत

कला शिक्षा का भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ एकीकरण: नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में

ममता सक्सेना

DOI: https://www.doi.org/10.33545/27068919.2025.v7.i9b.1731

सारांश

नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के समग्र परिवर्तन की परिकल्पना करती है और कला शिक्षा को मुख्य धारा में शामिल करने पर बल देती है। नीति के अंतर्गत भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपराओं का संरक्षण और संवर्धन उच्च प्राथमिकता रखता है। इस शोध पत्र में विश्वविद्यालय स्तर पर कला शिक्षा जैसे संगीत, चित्रकला, नृत्य इत्यादि को भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ जोड़ने के विभिन्न उपायों का विवेचन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कला गतिविधियां रचनात्मक आत्म संवेदना और आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देती हैं जिससे छात्रों में भारतीय ज्ञान प्रणाली की समझ भी गहराती है साथ ही, नीति में प्रस्तावित पाठ्यक्रम सुधार, शिक्षण प्रशिक्षण और कलाकार उपस्थित जैसी पहलो पर प्रकाश डालते हुए इसमें व्यावहारिक उदाहरण और नीतिगत अनुशंसाएं प्रस्तुत की गई है।

मूलशब्द: नई शिक्षा नीति, कला शिक्षा, संगीत, चित्रकला, नृत्य, भारतीय ज्ञान

प्रस्तावना

मुख्य शोध पत्र

भारतीय शिक्षा जगत में नई शिक्षा नीति 2020 में कला और संस्कृति को पुनः केंद्र में लाने का बीड़ा उठाया है! नीति के अध्याय भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का संवर्धन में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भारत की सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदा का संरक्षण संवर्धन एवं प्रसार देश की उच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय सांस्कृतिक विरासत को संपूर्ण शिक्षा का अभिन्न अंग मानती है, जिससे विद्यार्थियों में राष्ट्रीय आत्म परिचय, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक गरिमा की भावना विकसित हो।

कला शिक्षा को भी नीति ने मुख्य धारा से जोड़ा है, क्योंकि यह कई बौद्धिक और सामाजिक क्षमताओं को जागृत करती है ! जैसा कि अनुसंधान में उल्लेख किया गया है NEP 2020 कला शिक्षा और अन्य विषयों के क्रॉस इंटीग्रेशन पर जोर देता है ! कला शिक्षा छात्रों में भावनात्मक जागरूकता आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, समस्या समाधान, कौशल और व्यावहारिक अधिगम को बढ़ावा देती है ! इन गुणों के द्वारा छात्रों को भारतीय ज्ञान परंपरा की गहरी समझ प्राप्त होती है, जिससे शिक्षा अधिक समावेशी और सुसंगत बनती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में कला का विशेष स्थान रहा है ! यह केवल रचनात्मक गतिविधियों तक सीमित नहीं बल्कि प्राचीन ग्रंथो और दार्शनिक चिंतन से गुंथा हुआ है ! उदाहरण के लिए भरतनाट्यम और कत्थक जैसे शास्त्रीय नृत्य परंपराओं में भरत मुनि के नाट्य शास्त्र का अध्ययन निहित है हिंदुस्तानी और कर्नाटिक संगीत में राग ताल की परंपरागत शिक्षाएं प्रचलित हैं और मंदिर स्थापत्य में वास्तु शास्त्र का ज्ञान समाहित है। शिक्षा मंत्रालय के अनुसार भारतीय ज्ञान प्रणालिया ज्ञान विज्ञान और जीवन दर्शन का समुच्चय है, जिन्होंने शिक्षा, कला, प्रशासन, न्याय, स्वास्थ्य इत्यादि क्षेत्रों को प्रभावित किया है ! इनकी विशेषता है कि यह मौखिक टैक्स टुअल और कलात्मक परंपराओं द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित हुई है !

अतः भारतीय कला शिक्षण में इन परंपराओं के समावेश से विद्यार्थियों में संस्कृतीक आत्म साक्षात्कार पैदा होगा और भारतीय सौंदर्य शास्त्र की मूल अवधारणाएं परिलक्षित होगी।

विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा में वर्तमान में कला शिक्षा अक्सर कला स्नातक या परफॉर्मिंग आर्ट संकाओं तक सीमित है, लेकिन नई शिक्षा नीति का उद्देश्य इसे अन्य विषयों के साथ अंत प्रवेशी बनाना है। उदाहरणता संस्थान अपने पाठ्यक्रमों में भारतीय कला के इतिहास और सिद्धांत को शामिल कर सकते हैं ! अनुसंधान से पता चलता है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में पारंपरिक भारतीय कला, हस्त-शिल्प, नृत्य, संगीत और नाटक को शामिल करने से न केवल सांस्कृतिक धरोहर संरक्षित होती है, बल्कि छात्रों को समग्र शिक्षा भी मिलती है इसके अलावा विशेष विभाग या शोध केंद्र स्थापित करने की भी सलाह दी गई है जैसे भारतीय कला इतिहास, संगीत शास्त्र और प्रदर्शन कला के विभाग इन केंद्रों में कलानुगत शिक्षक और शोध से कला संबंधित पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित एवं विकसित किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम सुधार की दिशा में, नीति और संबद्वित दिशा निर्देश यह सुनिश्चित करते हैं की कला शिक्षा में भारतीय तत्व स्पष्ट रूप से शामिल हो ! उदाहरण के लिए उच्च शिक्षा में भारतीय विरासत और संस्कृति पर आधारित पाठ्यक्रमों में हिंदुस्तानी संगीत, शास्त्रीय नृत्य रूप, दृश्य कला आदि विषय शामिल किए गए हैं ! ऐसी बहुस्तरीय पाठ्यक्रम संरचना के माध्यम से योग आयुर्वेद के साथ-साथ संगीत और नृत्य की मौलिक परंपराएं भी अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों को आकर्षित कर सकती हैं ! पाठ्यक्रम में इस तरह की सामग्रियां जोड़ने से छात्र भारतीय ज्ञान परंपरा और कला के मूल मंत्रों को सीखेंगे और साथ ही आत्मसात करेंगे।

एक महत्वपूर्ण पहल कलाकार इन रेजिडेंस की है, भारत सरकार के यूजीसी के दिशा निर्देश जारी किए हैं कि विश्वविद्यालय में पारंपरिक कला कौशल वाले कुशल कलाकारों को कलाकार इन रेजिडेंस के रूप में नियुक्त किया जाए इन कलाविदों/कला गुरुओं के नियमित शिक्षक, अनुसंधान और कार्यशाला आयोजन में शामिल होने से पारंपरिक कला का व्यावहारिक अनुभव छात्रों तक पहुंचेगा ! यूजीसी के अनुसार इस पहल का उद्देश्य कलाकारों के साथ शैक्षिक संस्थानों के सहयोग को बढ़ाना है, ताकि कलात्मक अनुभव को पारंपरिक शिक्षा के साथ जोड़ा जा सके ! इससे छात्र गुरु शिष्य परंपरा में सीख सकेंगे और कला शिक्षा अधिक व्यावहारिक एवं सृजनात्मक बन जाएगी !

शिक्षक प्रशिक्षण पर भी ध्यान दिया गया है नीति के अनुरूप उच्च शिक्षा संस्थान अपने संकायों को भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रणाली से परिचित कराने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेंगे उदाहरण स्वरुप १३ अप्रैल २०२३को यूजीसी ने भारतीय ज्ञान प्रणाली पर संकाय प्रशिक्षण के दिशा निर्देश जारी किए जिससे अधिक शिक्षक भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों से परिचित हो सके और अपने शिक्षण में उन्हें शामिल कर सके ! इन कार्यक्रमों से कला शिक्षको को भारतीय नाट्यशास्त्र, संगीत शास्त्र, वास्तु शास्त्र आदि की ज्ञान धाराओं को समझने और पढ़ने में सहायता मिलेगी।

नीतिगत अनुशंसाएं और व्यावहारिक उदाहरण

पाठ्यक्रम सुधार

विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में भारतीय पारंपरिक कला विषयों को शामिल करने के लिए पहल करना आवश्यक है ! उदाहरण यूजीसी के दिशा निर्देश अनुसार प्रत्येक स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में कुल क्रेडिट का कम से कम पांच प्रतिशत भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित पाठ्यक्रमों के लिए आरक्षित किया जाना चाहिए ! इसी तरह भारतीय विरासत आधारित कोर्सों में हिंदुस्तानी संगीत, शास्त्रीय नृत्य और दृश्य कलाओं को स्थान दिया गया है ! इन पाठ्यक्रमों के समावेश से छात्र संगीत, चित्रकला और नृत्य की पारंपरिक अवधारणाओं से परिचित होंगे !

कलाकार उपस्थित पहल

विश्वविद्यालय में पारंपरिक कला में माहिर कला गुरुओं को आर्टिस्ट इन रेजिडेंस के रूप में आमंत्रित किया जाए जैसा कि यूजीसी के दिशा निर्देश सुझाते हैं ! इस तरह के कलाकार कार्यालय चला सकते हैं लाइव प्रदर्शन करा सकते हैं और पारंपरिक कलाओं की तकनीकी सीख सकते हैं उदाहरण के लिए एक मूर्तिकार को वास्तु शास्त्र में पारंपरिक शिल्प कला पढ़ने के लिए शामिल किया जा सकता है या एक लोक संगीतकार को क्षेत्रीय संगीत विद्या में कक्षाएं देने के लिए बुलाया जा सकता है !

शिक्षक प्रशिक्षण

कला शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा को समाहित करने हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षण पर जोर देना चाहिए इसके लिए विशेष इंडक्शन और रिफ्रेशर कोर्स आयोजित किए जाएं ! ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों से संगीत शिक्षकों को संगीत, नृत्य, चित्रकला आदि की पारंपरिक अवधारणाओं के साथ आधुनिक शिक्षण तकनीकों से जोडने मे मदद मिलेगी, नीति आयोग के नोट के अनुसार इस प्रकार के प्रशिक्षण से भारतीय ज्ञान प्रणाली को समझकर उसे अपने विषयो में लागू कर सकते हैं !

व्यावहारिक कार्यशालाएं और स्थानीय आयोजन

विश्वविद्यालय परिसरों में नियमित रूप से कला महोत्सव, शिल्प प्रदर्शनिया, संगीत, नृत्य कार्यशालाएं आयोजित की जानी चाहिए ! इनमें स्थानीय और राष्ट्रीय कलाकारों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाए ! उदाहरण स्वरूप ग्रामीण हस्तशिल्प या लोक नृत्य की कार्यशालाओ में छात्रों को शामिल किया जा सकता है, जिससे वह अपने क्षेत्र की परंपरागत कलाओं को सीधे अनुभव करें ! इन गतिविधियों से सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ेगी और छात्रों में नवाचार के लिए प्रेरणा मिलेगी !

बहु विषयक संगोष्ठी और शोध केंद्र

कला विषयों को अन्य विषयों के साथ अंतः प्रवेशी तरीके से पढ़ाने के लिए विभिन्न विभागों के संयुक्त कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए उदहारण कला इतिहास, संगीत शास्त्र और नाट्य शास्त्र के अध्ययन के

लिए विशेष आकदमिक केंद्र स्थापित किए जाएं ! इसी तरह भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े विषयों पर अंतर विषयक संगोष्ठियां आयोजित करके विभिन्न विद्वानों को आमंत्रित किया जा सकता इससे कला से संबंधित पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोनो के साथ जोड़ा जा सकेगा !

स्थानीय भाषा और संसाधनों का उपयोग

कला शिक्षा में स्थानीय भाषाओं और सामग्री का प्रयोग बढ़ाया जाए, उदाहरण के लिए संगीत एवं नृत्य के पारंपरिक ज्ञान को क्षेत्रीय भाषाओं में दस्तावेजीकृत करके पढ़ाया जा सकता है ! यह छात्रों में भाषा और संस्कृति के प्रति निकटता बढ़ाएगा तथा वैश्विक प्रासंगिकता के साथ भी जोड़ बनाएगा !

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 कला शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा के एकीकरण के महत्व को रेखांकित करती है ! नीति के अनुरूप शैक्षिक संस्थाएं कला को अन्य विषयों के साथ समग्र रूप से जोड़कर एक बहुआयामी सीखने का अवसर प्रदान करेंगे! भारतीय सांस्कृतिक तत्वों जैसे भरतनाट्यम का नाट्यशास्त्र, राग रागिनी, हस्तशिल्प की तकनीकी को पाठ्यक्रम में शामिल करने से छात्रों में रचनात्मक सांस्कृतिक पहचान एवं आलोचनात्मक कौशल को बल मिलेगा! अनुसंधान बताते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश शिक्षा को अधिक समावेशी, नैतिक और टिकाऊ बनता है ! हालांकि इस समन्वय को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए पाठ्यक्रम विकास, शिक्षण प्रशिक्षण, संसाधन जुटाना मानवीकरण जैसी चुनौतियों का सामना करना होगा ! उपयुक्त नीतिगत अनुशंसाएं और उदाहरण इसी दिशा में उठाए गए कदम है इन पहलो से कला शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को जीवत किया जा सकेगा, जिससे संस्कृति का संरक्षण और नवाचार दोनों सुनिश्चित होंगे ! अंततः शिक्षा के इस परिवर्तन से विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गर्व और वैश्विक दृष्टिकोण का संतुलन विकसित होगा तथा विश्वविद्यालय शिक्षा और समृद्ध होगी !

संदर्भ

1. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार राष्ट्रीय नीति 2020
2. भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय इंडियन नॉलेज सिस्टम
3. Anupama CS. Holistic approach of Art education in the view of NEP2020 international Journal of Management and Development studies; 2024.
4. Bhuyan, Pallabi. From Traditional to Innovation Integrating Indian Knowledge System into Art Education under NEP 2020, international Journal of Scientific Research in Engineering and Management; 2025.
5. Indurkar V. Arts will be at par with other subjects in new Education policy, Times of India 20 March 2022; 2022.
6. University Grants Commission Guidelines for Empanelment of Artists/Artisans in Residence in Higher Education Institutions
7. University Grant Commission Guidelines for Introducing Courses based on Indian Heritage and Culture.
8. Kumar S, *et al*. Integrating Traditional Indian knowledge system into Higher Education, International Journal of Current Science. 2024;14(3).